ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को प्रकाशकोत्सव
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अक्तूबर, 2013 से रविवार 27 अक्तूबर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

निर्वाण दिवस (दीपावली) पर विशेष

एक ज्योतिपुँज जिससे रौशन हैं लाखों दीये

सत्य, न्याय एवं वेद के आग्रही महर्षि दयानन्द सरस्वती

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

महर्षि दयानन्द का जन्म फाल्गुनी कृष्ण दशमी सं 1881 विक्रमी सन् 1827 ई. को सौराष्ट्र (गुजरात) टंकारा, मौरवी में हुआ था, इनके पिताजी कर्षणजी तिवारी औदीच्य कुल के सामवेदी ब्राह्मण थे। वे निष्ठावान शिव भगवान् के भक्त थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम ''मूलशंकर'' रखा था। इसलिए महर्षि दयानन्द का जन्म से नाम मूलशंकर था। सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी पिताजी ने मूलशंकर को यजुर्वेद की रुद्राध्यायी कंठस्थ करा दी थी। कर्षण जी अपने पुत्र मूलशंकर को भगवान् शिव जी की कहानियां बड़ी निष्ठा से सुनाया करते थे। पिताजी के आग्रह पर मूलशंकर ने 14 वर्ष की आयु में पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ शिवरात्रि का व्रत किया, दिनभर भगवान् शिव की कथा वार्ता होती रही और मूलशंकर ने दृढ़ता से उपवास किया था। सायंकाल पिताजी मूलशंकर को साथ ले, शिव के पूजन की सामाग्री लेकर गाँव के बाहर मन्दिर में शिवरात्रि का पूजन करने के लिए गये, मूलशंकर के पिताजी बड़े धनाढ्य सम्पन्न ब्राह्मण थे। शिवरात्रि में शिव की पिंडी का पूजन चारों पहर में चार बार होता है, रात्रि जागरण का विशेष फलदायक महत्त्व है, प्रथम प्रहर का पूजन बडे ठाट-बाट घटाटोप से हुआ, दूसरे प्रहर का पूजन भी हो गया, तीसरे प्रहर में निद्रा देवी ने सबको दबा लिया, मूलशंकर के पिताजी और मन्दिर के पुजारी जी, सभी निद्रा के वश में हो गए, सिर्फ मूलशंकर पूरी श्रद्धा भक्ति से जागते रहे, मन्दिर में पूर्ण नीरवरता, शान्ति छाई हुई थी। इतने में मन्दिर के इधर-उधर से दो-चार चूहे पिंडी पर अर्पित सामग्री को खाने के लिए शिव की पिण्डी पर उछल-कूद करने लगे, मूलशंकर के हृदय में प्रभु-कृपा से सत्य का प्रकाश हुआ, उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि यह पिण्डी कल्याणकारी भगवान् शिव कैलाशवासी तांडवकारी भगवान् शंकर नहीं हो सकती, यह सत्य के प्रति प्रथम आग्रह था। उन्होंने पिताजी को जगाया किन्तु पिताजी और पुजारी मूलशंकर को सन्तुष्ट नहीं कर सके और सत्य के प्रति आग्रही मूलशंकर घर आ गये, सत्य के प्रति यह परम दुर्दान्त आग्रह म्हर्षि दयानन्द से सम्पूर्ण जीवन में बड़ी दृढ़ता से बना रहा और महर्षि दयानन्द ने यावत् जीवन सत्य का प्रचार किया और किन्हीं भी परिस्थितियों में सत्य के साथ समझौता नहीं किया।

महर्षि दयानन्द ने अपने युगान्तरकारी कालजयी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की भूमिका में लिखा है

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती

''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेहारा है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुका जाता है।''

महर्षि ने वहीं भूमिका में पुन: लिखा है– ''विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरुप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें, ''वहीं पुन: लिखते है– "यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतंत्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्ते-वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविधि दु:ख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।" यह उद्धरण किसी समीक्षा या व्याख्या की आकांक्षा नहीं करते।

– शेष पृष्ठ 5-6 पर

वेद-स्वाध्याय

देवों को मोक्ष की प्राप्ति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।। ऋग्वेद 10/63/4

अर्थ—(नृचक्षसः) मनुष्यों को ज्ञान का दर्शन कराने वाले **(अनिमिषन्तः)** सावधान, सदा जागरूक रहने वाले **(अर्हणा)** सबके पूज्य, योग्य **(देवासः)** विद्वान् **(बृहत् अमृतत्वम् आनशुः)** महान् अमृततत्त्व-मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं। **(ज्योतीरथाः)** देव ज्ञान के रथों पर आरूढ़ रहते हैं **(अहिमाया)** उनकी बुद्धि क्षीण न होकर ऋतम्भरा प्रज्ञा बन गई है **(अनागसः)** वे सर्वथा निष्पाप हो गये हैं। वे **(दिवः वर्ष्माणम्)** ज्ञान से दीप्त, परम धाम मोक्ष को स्वस्तये कल्याणार्थ **(वसते)** धारण, आच्छादन करते हैं।

सत्य, अहिंसा, परोपकार और ज्ञानादि गुणों से युक्त देव कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त उनमें मन्त्रोक्त निम्न गुणों की प्रधानता भी रहती है जो उन्हें मोक्ष पद की प्राप्ति तक ले जाती है।

१. नृचक्षसः—देव अन्य लोगों के ज्ञान चक्षुओं का उद्घाटन कर उन्हें भी सत्यमार्ग का पथिक बना देते हैं। उन्हें मनुष्यों की पहचान करनी आती है। योग बल से वे दूसरे के मन की बात भी जान लेते हैं। उनके कृपा- कटाक्ष से कितने ही जनों का उद्धार हो गया है। वाल्मीकि, अंगुलिमाल जैसे खूंखार डाकू भी उनके दर्शन कर सन्त बन गये। शराबी, जुआरी, वेश्यागामी, महता अमीचन्द भक्त अमीचन्द बन गया। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं। महर्षि दयानन्द के अन्तिम दर्शन कर नास्तिक गुरुदत्त ऋषि का दीवाना हो गया। ऐसा इसलिये होता है कि उनके नेत्रों से उत्सर्जित प्राण ऊर्जा उनके सम्पर्क में आने वाले और जो उनकी कृपा के पात्र बन गये हैं उनके ज्ञान-चक्षुओं को खोल देती है।

२. अनिमिषन्तः—देव सदा जागरूक रहते हैं। उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध रहता है और वे सांसारिक मोहमाया के बन्धन में न फंसकर जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने के प्रयास में रहते हैं। वे परोक्षप्रिय होते हैं। जहाँ असुर इस लोक को ही सत्य मान खाने-पीने और मौज उड़ाने में मस्त रहते हैं वहाँ देव इस लोक के साथ परलोक अर्थात् अगले जन्म के लिये शुभ कर्मों का आचरण करते हैं। उन्हें अपने गन्तव्य मोक्ष का भी ध्यान रहता है। गीता कहती है—

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥ गीता २.६९॥

सम्पूर्ण प्राणियों के लिये जो रात्रि के समान है, उसमें नित्य-ज्ञान-स्वरूप परमानन्द की प्राप्ति में योगी जागता है और जिस सांसारिक सुख की प्राप्ति हेतु सब प्रयत्नशील हैं, परमात्म तत्त्व को जानने वाले मुनि के लिये वह रात्रि के समान है।

३. अर्हणा—अपने तप, त्याग और सद्गुणों से वे सबके प्रिय बन गये हैं। अहिंसा की सिद्धि से उनके मन में से सब प्राणियों के प्रति वैरभाव की समाप्ति हो गयी है और उसके सम्पर्क में आने वालों का भी हिसंक स्वभाव छूट गया है। सत्य की प्रतिष्ठा से उनकी वाणी अमोघ बन गई है। मन, वचन, कर्म से चोरी का सर्वथा परित्याग करने से सब लोग उन्हें भेंट में विविध वस्तुओं को देने लगे हैं।

४. ज्योतीरथाः रमण करने के साधन को रथ कहते हैं। अब ये देव ज्ञान के रथ पर सवार हो आत्मा-परमात्मा का चिन्तन करते हैं। बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो जाने से इन्हें दिव्य विभूतियों के दर्शन होने लगे हैं। **ज्ञानान्मुक्तिः**=मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान से होती है। वे जान गये हैं कि चित्त में जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध के विषयों की अनुभूति होती है, उन्हें अज्ञानवश मैं अपने में जान सुखी-दुःखी हो रहा था। मैं शुद्ध-बुद्ध, चेतन-स्वभाव-युक्त आत्मा हूँ जिसका इनसे कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यह दृश्य अर्थात् भोग और द्रष्टा-भोक्ता आत्मा का परस्पर सम्बन्ध ही बन्धन का कारण है। जब विवेक ज्ञान हो जायेगा तब इस सम्बन्ध की समाप्ति हो मोक्ष ही मिलेगा।

५. अहिमायाः रजोगुण और तमोगुण का आवरण हट जाने से उनकी बुद्धि में सत्त्व का प्रादुर्भाव हो गया है और सम्प्रज्ञात समाधि की स्थिति में उनकी बुद्धि ऋतम्भरा बन गई है जो उन्हें वस्तु का यथार्थ ज्ञान इन्द्रियों के बिना भी करा देती है। ऐसी बहुत-सी अतीन्द्रिय सिद्धियों के वे स्वामी बन गये हैं।

६. अनागसः वे सर्वथा निष्पाप हो गये हैं। शरीर से किये जाने वाले पाप हिंसा, चोरी और परस्त्रीगमन से वे सर्वथा पृथक् हो गये हैं। परस्त्री माता के समान, परधन मिट्टी के सदृश और सभी प्राणियों में अपने जैसी ही आत्मा को जान वे पाप कर्मों से सर्वथा पृथक् और शुद्ध पवित्र बन गये हैं। वाणी से किये जाने वाले पाप-असत्य, चुगली करना, कठोर बोलना, अनर्गल प्रलाप करना उन्होंने छोड़ दिया है। इसी भाँति मन से किसी का अनिष्ट चिन्तन, किसी के स्वत्व का ग्रहण और नास्तिक भाव का परित्याग कर दिया है। ज्ञान की अग्नि ने उनके सब पापों को भस्मसात् कर उन्हें पवित्र बना दिया है।

इन गुणों को धारण कर वे **दिवो वर्ष्माणम् अमृतत्वमानशुः** ज्ञान से आलोकित परमपद मोक्ष को प्राप्त हुये हैं। मनुष्य जीवन का कल्याण इसी में है। **अयं तु परमो धर्मो यद् योगेनात्म दर्शनम्** (याज्ञ०स्मृ०) योग से आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार ही मानव जीवन का परम कर्त्तव्य, धर्म है।

यद्यपि अब उन्हें इस संसार में कुछ भी करना शेष नहीं रह गया है परन्तु वे **स्वस्तये** जनहित के कार्यों में दिनरात संलग्न रहते हैं। जैसे फल आने पर वृक्ष की शाखायें नीचे की ओर झुक जाती हैं वैसे ही अब उनकी विनम्रता, बालकों जैसा निरीह, निष्कपट व्यवहार जीवमात्र के ऊपर करुणा दृष्टि और अन्य लोगों को भी मुक्ति पथ का पथिक बनाना ही उनका कार्य है जिसे वे बिना किसी सम्मान की अपेक्षा के करते रहते हैं। इन देवों के दर्शन मात्र से ही मन में समत्व का भाव और सुखद शान्ति की अनुभूति होने लगती है।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर द्वारा एकत्र

712	सर्वश्री नीटे	100
713	बलवान सोलंकी	100
714	रामेश्वर सोलंकी	100
715	सन्दीप सुपुत्र रामभगत सोलंकी	500
716	राजबीर (जीरी)	500
717	रामसिंह	100
718	डॉ. आर. के. सहरावत	100
719	विजेन्द्र गौड़	500
720	डॉ. राजेश लाम्बा	1100
721	रामसिंह लाम्बा	500
722	सुनील यादव (रजोकरी)	1100
723	तेजपाल यादव (रजोकरी)	100
724	राजेश्वर सोनी	100
725	रामनन्द चौहान	100
726	राजेश (राजोकरी स्कूल)	100
727	रोहिताश्वः	100
728	ज्ञान सिंह	100
729	शिव शंकर	501
730	नवीन लाम्बा	1100
731	श्रीमती लक्ष्मीदेवी	100
732	जयदेव सोलंकी	2100
733	प्रताप सोलंकी (मास्टरजी)	2100
734	सुरेन्द्र सोलंकी	101
735	परमानन्द सैनी	101
736	श्रीमती शान्ति देवी	251
737	रामनाथ लाम्बा	100
738	जय भगवान लाम्बा	100
739	करतार सोलंकी	255
740	श्रीमती अंगूरी देवी	200
741	लोकेश पहल (महिपालपुर)	500
742	वीरेन्द्र सोलंकी	1100
743	धर्मबीर सोलंकी	500
744	श्रीमती लक्ष्मी देवी	100
745	युद्धवीर सिंह	100
746	धीरे सोलंकी	100
747	चन्द्रभान शर्मा	250

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

— विनय आर्य, महामन्त्री

ऐतिहासिक शोध लेख

शारदा देश कश्मीर–जो कभी संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा

आज जम्मू व कश्मीर राज्य की राजभाषा उर्दू है। सच तो यह है कि उर्दू भारत तथा पाकिस्तान के किसी भी प्रान्त की मातृभाषा नहीं हैं। पाकिस्तान में सिंधी, पंजाबी, बलोची तथा पश्तो भाषाओं का चलन है तो भारत के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, केरल, तमिलनाडु तथा आंध्र में वहां के मुसलमान गुजराती, मराठी, बंगला, मलयालम, कन्नड़, तमिल तथा तेलुगु आदि का प्रयोग मातृभाषा की भांति करते हैं। दिल्ली, लखनऊ तथा हैदराबाद आदि दो तीन शहरों की बात छोड़ दें तो उर्दू किसी भारतीय राज्य की मुख्य भाषा नहीं है। तथापि कश्मीर में हिन्दी का भी प्रचलन नहीं के बराबर है, संस्कृत की चर्चा तो दूर की बात है।

इस स्थिति में कौन इस बात पर विश्वास करेगा कि किसी समय कश्मीर राज्य संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा था। यहां उत्पन्न संस्कृत कवियों ने उच्च कोटि के काव्य की रचना की, तो यहां के शास्त्र मर्मज्ञ एवं साहित्य शास्त्रवेत्ता विद्वानों ने काव्य–मीमांसा में उच्च मानदण्ड स्थापित किये। यहां के दार्शनिकों ने प्रत्यभिज्ञा दर्शन को जन्म दिया तो इतिहासज्ञों ने कश्मीर के समसामयिक इतिहास को अपनी ग्रन्थों में विवेचना की। सरस्वती की क्रीड़ा स्थली इस कश्मीर में महाकवि बिल्हण ने यदि 'शारदा देश' कहा, तो यह उचित ही था, अत्युक्ति नहीं थी।

यहां के संस्कत विद्वानों के नामों में भी एक विशिष्टता दृष्टि गोचर होती है। एक ओर कल्हण, बिल्हण, जल्हण, शिल्हण जैसे नाम हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं जो 'ण' वर्ण पर समाप्त होते हैं तो दूसरी ओर उव्वट, कैयट, मम्मट, रूद्रट तथा उद्भट आदि 'ट' अन्त वाले नाम हैं। इन नामों को सुनते ही हम इस निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं कि यह व्यक्ति कश्मीर वास्तवय है। कितनी विडम्बना है कि संस्कृत के उपर्युक्त विद्वानों की धरोहर की रक्षा करने वाले वहां के पण्डित वर्ग को घाटी से एक सुविचारित दुरभिसन्धि के द्वारा मुल्कबदर(देश से निष्कासित) किया गया। गुजरात के दंगों पर आंसू बहाने वालों को इस बात की क्या चिन्ता है कि कश्मीर के निवासी इन पण्डितों को अपने जन्म स्थान से क्यों हटाया गया?

प्रथम हम यहां के संस्कृत कवियों की चर्चा करें। गौड अभिनन्द नामक कवि ने लघु योग वासिष्ठ की रचना की। पांच हजार से कुछ कम श्लोकों में रचा गया यह ग्रन्थ प्रसिद्ध दर्शनग्रन्थ 'योगवासिष्ठ' का काव्यरूप है। 'नव साहसांक चार्ट के रचयिता पद्मगुप्त ने अपने आश्रयदाता राजा के गुणों व शील का वर्णन इस काव्य में किया है। एक अन्य काव्य 'कुह मीमत' की रचना कश्मीर नरेश जयादित्य के प्रधान अमात्य दामोदर गुप्त ने की थी। यह काव्य लोक जीवन के उस पहलू को उजागर करता है जो वारांगनाओं से सम्बन्ध रखता है। अभिशप्त तथा लोकनिंदा सहने वाली ये बालाएं कैसा जीवन जीती है उसे इस काव्य में देखा जा सकता है। कश्मीर के एक नरेश मातृगुप्त स्वयं कवि थे और श्रेष्ठ काव्य रचना करते थे। यहां कवि भर्तृभठ के नाम का उल्लेख आवश्यक है जिसने 'हयग्रीव वघ' नाम काव्य प्रसिद्ध पौराणिक कथानक को आधार बनाकर लिखा। इस काव्य में वक्रोक्तियों का प्रयोग इतना चमत्कारपूर्ण है कि काव्य मीमांसा के लेखक आचार्य राजशेखर ने उसकी विस्तृत चर्चा की है। यहां आचार्य क्षेमेन्द्र का उल्लेख आवश्यक हैं यों तो काव्य में 'औचित्य' नामक तत्व का महत्व सिद्ध कर आचार्य क्षेमेन्द्र ने काव्य विवेचन को नया आयाम दिया था। उनका ग्रन्थ 'औचित्य विचार चर्चा' इस विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ है। तथापि यह नहीं भूलना चाहिए कि वे स्वयं संस्कृत के इस सिद्ध कवियों रामायण मंजरी, भारतमंजरी तथा बृहत् कथा मंजरी आदि ग्रन्थों के द्वारा उन्होंने अपने काव्य ने पुण्य को व्यक्त किया है। इस प्रकार पुरातन इतिहास ग्रन्थों को नई शैली में पद्य रूप देना उनकी विशेषता थी।

क्षेमेन्द्र के अलंकार शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों में 'कवि कष्ठाभरण' तथा 'सुवृत्त तिलक' का उल्लेख भी आवश्यक है। उनका लिखा 'श्रीकण्ठ चरित' भक्ति प्रधान काव्य है जिसमें भगवान् शिव द्वारा त्रिपुरासुध वघ के कथानक को निबद्ध किया गया है।

बिल्हण के विक्रमांक देव चरित की चर्चा के प्रसंग में यह कहना आवश्यक है कि उसका कश्मीर को शारदा देश कहना सर्वथा उचित था, क्योंकि यही वह रम्यभूमि है जहां सरस्वती ने अपने लीला विलास को काव्यकृतियों के माध्यम से व्यक्त किया था। अब 'साहित्य शास्त्र' से सम्बद्ध ग्रन्थों की चर्चा करें। साहित्यालोचन के विभिन्न सम्प्रदाय प्रवर्त्तकों की जन्मदात्री यही भूमि है। अलंकार शास्त्र में आचार्य मामट्ट नाम सर्वोपरि है। 'काव्यालंकार' की रचना कर उन्होंने काव्य में अलंकारों के महत्त्व को स्थापित किया। आचार्य वामन ने 'रीति' को काव्य का आत्मा ठहराया– 'रीतिरात्मा काव्यस्थ' और वैर्दभी, गौड़ी तथा पांचाली आदि का निरूपण किया। वामन के अनुसार अलंकारों के मूल में तीन तत्त्व प्रधान हैं–'औपम्य' (उपमा देने वाले), अतिशय (अतिशयोक्ति पूर्णकथन) तथा 'श्लेष'–द्विविध अर्थो के बोधक शब्दों का प्रयोग। इन्हीं मूल तत्त्वों से विभिन्न अलंकार बनते हैं।

'ध्वन्यालोक' ग्रन्थ के लेखक आचार्य आनन्द वर्द्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा बताया–''काव्यस्य आत्मा ध्वनिदिति बुधै समाम्रायः' कहकर उन्होंने ध्वनि प्रधान काव्य को ही श्रेष्ठ ठहराया। माहिमभट्ट ने 'व्यक्ति विवेक' लिखा, रुय्यक ने 'अलंकार सर्वस्व' की रचना की तथा ध्वनि सम्प्रदाय के मूल ग्रन्थ ध्वन्यालोक की 'लोचन' नाम टीका लिखकर आचार्य अभिनव गुप्त ने साहित्य शास्त्र को एक कालजयी ग्रन्थ प्रदान दिया।

यह नहीं भूलना चाहिए कि आचार्य अभिनव गुप्त मात्र साहित्य मीमांसक ही थे। वे दार्शनिक भी थे। प्रत्यभिज्ञा नामक शैव दर्शन की स्थापना का श्रेय उन्हें ही है। यही कारण है कि कश्मीर में वर्षो तक शैव सम्प्रदाय का बोलबाला रहा। अब इस सिद्धान्त की यदि चर्चा करें तो आचार्य मम्मट के 'काव्य प्रकाश' का नाम प्रथम पंक्ति में है। मम्मट ने काव्य की जो परिभाषा दी, यद्यपि उसकी व्याख्याएं आगे–चलकर आचार्यं ने भिन्न–भिन्न प्रकार से की तथापि उनकी दी गई काव्य परिभाषा–'तद्दोंषौशब्दौर्षा सगुणावनलंकृती पुन: क्वापि' काव्य वह शब्द और अर्थ का समूह है जो दोष रहित है, यन्त्र–तन्त्र अलंकारों का उसमें प्रयोग होता भी है किन्तु यह अनिवार्य नहीं है।

अलंकारहित काव्य भी श्रेष्ठ हो सकता है, यह अवश्य है कि वह इस से युक्त हो। कालान्तर में भट्ट लोल्लट, आचार्य शंकुक तथा आचार्य अभिनवगुप्त ने उक्त परिभाषा सूत्र की विभिन्न व्याख्याएं कीं।

प्राय: आक्षेप लगाया जाता है कि भारत में इतिहास के प्रमाणिक ग्रन्थ नहीं लिखे गये। इसके उत्तर में यदि हम कल्हण की 'राजतंरगिणी' को प्रस्तुत करें तो उक्त आक्षेप कहीं नहीं टिकता कल्हण राजा हर्षदेव के प्रधानमंत्री थे। आठ तरंगों में निबद्ध यह इतिहास तत्कालीन शासन व्यवस्था, सामाजिक स्थिति तथा धार्मिक दशा की वस्तुनिष्ठ जानकारी देता है। अन्तत: कहना पड़ता है कि कश्मीर की नैसर्गिक सुषमा ने यदि लोगों को मुग्ध किया तो वहां के विद्वानों के वैदुष्य ने सारस्वत समाज को चमत्कृत किये रखा था।

– डॉ. भवानी लाल भारतीय
3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 130वें बलिदान पर

ऋषि मेला : 8, 9, 10 नवम्बर, 2013

आयोजन स्थल : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।
निवेदक : परोपकारिणी सभा, अजमेर (राज.)

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) को निम्न पदों के लिए आवश्यकता है–

1. **हिन्दी प्रूफ रीडर** जो प्रूफ रीडिंग के साथ–साथ सम्पादन कार्य में भी रूचि रखते हों। हिन्दी–अंगेजी दोनों की योग्यता वालों को प्राथमिकता।

2. **साहित्य प्रचारक** जो विभिन्न पुस्तक मेलों में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार–प्रसार कर सकें एवं स्टाल पर आने वाले जिज्ञासु को सन्तुष्ट कर सकें।

3. **सेल्समैन** – जो सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य को जहां–तहां विक्रय कर सके तथा विक्रय हेतु आर्डर ला सके।

सभी पदों के लिए गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। सभी पद पूर्णकालिक हैं। सम्बन्धित क्षेत्र से सेवानिवृत्त भी आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक आवेदक अपना बायोडाटा निम्न पते पर भेजें/ ईमेल करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
Email:aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

गतांक से आगे

महात्मा गाँधी, इस्लाम और आर्यसमाज

- डॉ० विवेक आर्य

मैं जानती हूँ कि मुझे इससे प्रसन्नता भी है कि हमारे चिर-परिचित मुस्लमान मित्रों और विचारशील मुसलमानों ने इस आकस्मिक घटना की निंदा की है। आज मुझे उच्चमना डॉ. अंसारी की उपस्थित का अभाव बहुत खल रहा है, वे यदि होते तो आप लोगों और मेरे पुत्र को सत्परामर्श देते, मगर उनके समान ही और प्रभावशाली तथा उदार मुस्लमान हैं, यद्यपि उनसे मैं सुपरिचित नहीं हूँ, जोकि मुझे आशा है, तुमको उचित सलाह देंगे। मेरे लड़के को सुधारने की अपेक्षा मैं देखती हूँ कि इस नाम मात्र के धर्म परिवर्तन से उसकी आदतें बद से बदतर हो गई हैं। आपको चाहिए की आप उसको उसकी बुरी आदतों के लिए डाँट और उसको उल्टे रास्ते से अलग करें। परन्तु मुझे यह बताया गया है कि आप उसे उसी उलटे मार्ग पर चलने के लिए बढ़ावा देते हैं। कुछ लोगों ने मेरे लड़के को 'मौलवी' तक कहना शुरू कर दिया है। क्या यह उचित हैं? क्या आपका धर्म एक शराबी को मौलवी कहने का समर्थन करता हैं? मद्रास में उसके असद आचरण के बाद भी स्टेशन पर कुछ मुस्लमान उसको विदाई देने आये। मुझे नहीं मालूम उसको इस प्रकार का बढ़ावा देने में आप क्या खुशी महसूस करते हैं। यदि वास्तव में आप उसे अपना भाई मानते हैं, तो आप कभी भी ऐसा नहीं करेंगे, जैसाकि कर रहे हैं, वह उसके लिए फायदेमंद नहीं है। पर यदि आप केवल हमारी फजीहत करना चाहते हैं तो मुझे आप लोगो को कुछ भी नहीं कहना है। आप जितनी भी बुराई करना चाहें कर सकते हैं। लेकिन एक दुखिया और बूढ़ी माता की कमजोर आवाज शायद आप में से कुछ एक की अन्तरात्मा को जगा दे। मेरा यह फर्ज है कि मैं वह बात आप से भी कह दूँ जो मैं अपने पुत्र से कहती रहती हूँ। वह यह है कि परमात्मा की नजर में तुम कोई भला काम नहीं कर रहे हो।

(कस्तूरबा बा के हीरालाल गाँधी के नाम लिखे गये पत्र को पढ़कर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से इस हीरालाल के मुस्लमान बनने की तीव्र आलोचना की है एवं समझदार मुसलमानों से हीरालाल को समझाने की सलाह दी है।)

हीरालाल गाँधी को इस्लाम से धोखा और आर्यसमाज द्वारा उनकी शुद्धि

अब्दुल्लाह बनने के लिए हीरालाल गाँधी को बड़े-बड़े सपने दिखाए गये थे। गाँधीजी ने तो लिखा ही था की जो सबसे बड़ी बोली लगाएगा हीरालाल उसी का धर्म ग्रहण कर लेगा। हीरालाल के अब्दुल्लाह बनने के समाचार को बड़े जोर-शोर से मुस्लिम समाज द्वारा प्रचारित किया गया। ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ा मोर्चा उनके हाथ आ गया हो। हीरालाल की आसानी से रुपया मिलने के कारण उसकी हालत बद से बदतर हो गई। उनको मुस्लमान बनाने के पीछे यह उद्देश्य कदापि नहीं था की उनके जीवन में सुधार आये, उनकी गलत आदतों पर अंकुश लग सके परन्तु गाँधीजी को नीचा दिखाना था, हिन्दू समाज को नीचा दिखाना था उन्हें इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना था। अपने नये अवतार में हीरालाल ने अनेक स्थानों का दौरा किया एवं अपनी तकरीरों में इस्लाम और पाकिस्तान की वकालत की। उस समय हीरालाल कानपुर में थे। उन्होंने एक सभा में भाषण देते हुए कहा 'अब मैं हरीलाल नहीं बल्कि अब्दुल्ला हूँ। मैं शराब छोड़ सकता हूँ लेकिन इसी शर्त पर कि बापू और बा दोनों इस्लाम कबूल कर लें।'

आर्यसमाज द्वारा कस्तूरबा गाँधी की अपील पर हीरालाल को समझाने के कुछ प्रयास आरम्भ में हुए पर नये-नये अब्दुल्लाह बने हीरालाल ने किसी की नहीं सुनी। पर कहते हैं की झूठ के पाँव नहीं होते, जो विचार सत्य पर आधारित न हो, जिस विचार के पीछे अनुचित उद्देश्य शामिल हो वह विचार सुदृढ़ एवं प्रभावशाली नहीं होता। ऐसा ही कुछ हीरालाल के साथ हुआ। हीरालाल की रातें या तो नशे में व्यतीत होती अथवा नशा उतरने के बाद उनकी आँखों के सामने उनकी बूढ़ी माँ कस्तूरबा का पत्र उन्हें याद आने लगा जिससे उनका मन व्यथित रहने लगा।

उस काल में हिन्दू-मुस्लिम दंगे सामान्य बात थी। एक बार कुछ मुस्लमान उन्हें एक हिन्दू मन्दिर तोड़ने के लिए ले गये और उनसे पहली चोट करने को कहा। उन्हें उकसाते हुए कहा गया की या तो सोमनाथ के मंदिर पर मुहम्मद गोरी ने पहली चोट की थी अथवा आज इस मंदिर पर अब्दुल्लाह गाँधी की पहली चोट होगी। कुछ समय तक चुप रहकर, सोच विचार कर अब्दुल्लाह ने कहा की जहाँ तक इस्लाम का मैंनें अध्ययन किया है मैंनें तो इस्लाम की शिक्षाओं में ऐसा कहीं नहीं पढ़ा की किसी धार्मिक स्थल को तोड़ना इस्लाम का पालन करना है और किसी भी मंदिर को तोड़ना देश की किसी ज्वलंत समस्या का समाधान भी नहीं है। हीरालाल के ऐसा कहने पर उनके मुस्लिम साथी उनसे नाराज होकर चले गये और उनसे किनारा करना आरंभ कर दिया।

श्रीमान् जकारिया साहब जिन्होंने हीरालाल को अब्दुल्लाह बनने के लिए अनेक वायदे किये थे कि तो बात करने की भाषा ही बदल गई थी। जो मुस्लमान हीरालाल को बहकाकर अब्दुल्लाह बना लाये थे वे अपने मनसूबे पूरे न होते देख उन्हें ही लानते देने लगे।

आखिर उन्हें गाँधीजी का वह कथन समझ में आ गया की हीरालाल को अब्दुल्लाह बनाने से इस्लाम का कुछ भी फायदा होने वाला नहीं है। अब्दुल्लाह का मन अब वापिस हीरालाल बनने को कर रहा था परन्तु अभी भी मन में कुछ संशय बचे थे। इतिहास की अनोखी करवट देखिये कि गाँधीजी ने आर्यसमाज के शुद्धि मिशन की जहाँ खुलेआम आलोचना की थी उन्हीं गाँधीजी के पुत्र हीरालाल को आर्यसमाज की शरण में वापिस हिन्दू धर्म में प्रवेश के लिए, अपनी शुद्धि के लिए आना पड़ा था। आर्यसमाज बम्बई के श्री विजयशंकर भट्ट द्वारा वेदों की इस्लाम पर श्रेष्ठता विषय पर दो व्याख्यान उनके मन में बचे हुए बाकी संशयों की भी निवृति हो गई। जिन हीरालाल को मुसलमानों ने तरह-तरह के लोभ और वायदे किये थे उन्हीं हीरालाल को बिना किसी लोभ अथवा प्रलोभन के, बिना किसी झूठे वायदे के अब्दुल्लाह से हीरालाल वापिस बनाया गया।

बम्बई में खुले मैदान में हजारों की भीड़ के सामने, अपनी माँ कस्तूरबा और अपने भाइयों के समक्ष आर्य समाज द्वारा अब्दुल्लाह को शुद्धकर वापिस हीरालाल गाँधी बनाया गया।

अपने भाषण में हीरालाल ने उस दिन को अपने जीवन का सबसे स्वर्णिम दिन बताया। उन्होंने कहा की धर्म का सत्य अर्थ केवल उसकी मान्यताएँ भर नहीं अपितु उसके मानने वालों की संस्कृति, शिष्टता और सामाजिक व्यवहार पर उसका प्रभाव भी है। इस्लाम के विषय में अपने अनुभवों से मैंने यह सीखा है कि हिन्दुओं की वैदिक संस्कृति एवं उसको मानने वालों की शिष्टता और सामाजिक व्यवहार इस्लाम अथवा किसी भी अन्य धर्म से कही ज्यादा श्रेष्ठ है। इतना ही नहीं इस्लाम में पाई जाने वाली सत्यता हिन्दू संस्कृति की ही देन हैं। जिन मुसलमानों के मैं संसर्ग में आया वे इस्लाम की मान्यताओं से ठीक विपरीत व्यवहार करते हैं। इसलिए अब मैं इस्लाम को इससे अधिक नहीं मान सकता और मैं अब वहीं आ गया हूँ जहाँ से मैंने शुरुआत की थी। अगर मेरे इस निश्चय से मेरे माता-पिता, मेरे भाइयों, मेरे सम्बन्धियों को प्रसन्नता हुई है तो मैं उनका आशीर्वाद चाहूँगा। अंत में मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ और उन्हें मेरा सहयोग करने की विनती करता हूँ। हीरालाल वैदिक धर्म का अभिन्न अंग बनकर भारतीय श्रद्धानन्द शुद्धि सभा के सदस्य बन गये और आर्यसमाज के शुद्धि कार्य में लग गये। दिसम्बर १९३६ के सार्वदेशिक अखबार के सम्पादकीय में महात्मा नारायण स्वामी लिखते हैं-

अबुदुल्लाह से हीरालाल

महात्मा गाँधी के ज्येष्ठ पुत्र हीरा लाल गाँधी अब अब्दुल्लाह नहीं हैं। आर्य समाज मुंबई में वे शुद्ध करके प्राचीनतम आर्यधर्म में वापिस ले लिए गये हैं। हिन्दू धर्म का परित्याग करने में उन्होंने जो भूल की थी, उसे अनुभव करके और प्रकाश रूप में उसे स्वीकार करके उन्होंने अच्छा ही किया है। उनका उदहारण भाषा वेश में परिवर्तन करने वालो के लिए एक अच्छा उदहारण है। हीरालाल को हिन्दू धर्म के प्रति जो उन्होंने अपराध किया हैं उसका प्रायश्चित करना बाकी रह जाता है। उन्हें चाहिए की वे वैदिक धर्म के सुसंस्कृत रूप का अध्ययन करें और अपने जीवन को उसके सांचे में ढालें। यही उस अपराध का उत्तम प्रायश्चित है। जो मुस्लमान हीरालाल को इस्लाम के दायरे में बहुमूल्य वृद्धि समझे बैठे थे और जो उनमें सुधार की चेष्टा के बजाय उन्हें इस्लाम के प्रोपेगंडा का साधन बनाए हुए थे वे गलती पर थे और इस्लाम की असेवा कर रहे थे, वह बात यह घटना स्पष्ट करती हैं और धर्म परिवर्तन करने वाली अन्य संस्थाओं को भी अच्छी शिक्षा प्रदान करती हैं।

महात्मा गाँधी अपने पुत्र को वापिस पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए थे और सार्वजानिक रूप से चाहे उन्होंने स्वामी दयानंद को शुद्धि की प्राचीन व्यवस्था को फिर से पुनर्जीवित करने का श्रेय भले ही न दिया हो परन्तु उनकी मनोवृति से यह भली प्रकार से स्पष्ट हो जाता हैं की आर्यसमाज के आलोचक होते हुए भी उन्हें सहारा तो स्वामी दयानंद के सिद्धांतों का ही लेना पड़ा था।

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी दिल्ली में विराट यज्ञ एवं भक्ति संगीत सम्पन्न

आर्यसमाज झिलमिल में आयोजित यज्ञ-भजन एवं प्रवचन कार्यक्रम दिनांक 20 अक्तूबर को आयोजित किया गया। यज्ञ आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार के ब्रह्मत्व में हुआ। श्री धर्मसिंह शास्त्री एवं पं. दिनेश शास्त्री के मधुर भजन एवं पं. उदयभान शास्त्री व श्री धर्मपाल आचार्य जी के प्रवचन हुए। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी विशेष रूप से उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री हरिओम बंसल एवं मन्त्री श्री सुनहरी लाल यादव ने उपस्थित आर्यजनों का आभार एवं आर्य केन्द्रीय सभा की उप प्रधान श्रीमती उषा किरण आर्या जी का कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग के लिए भी धन्यवाद किया। - *अनिल भाटिया, कोषाध्यक्ष*

महर्षि दयानन्द सरस्वती के दीक्षा गुरु, योग गुरु तथा विद्या गुरु

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

टंकारा के युवा मूलशंकर ने बाईस वर्ष की आयु में गृह त्याग किया तथा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। अब उनका नाम शुद्ध चैतन्य हुआ। अध्ययन, भ्रमण तथा साधना करते-करते उन्होंने अनुभव किया कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पालन की भी अनेक मर्यादाएं तथा नियम हैं। इनमें एक है स्वयंपाकी होना, अर्थात् अपना भोजन स्वयं पकाना। इस कार्य में ब्रह्मचारी का पर्याप्त समय और श्रम लग जाता है। उधर तीव्र वैराग्य तथा ज्ञान प्राप्ति की अदम्य लालसा ने शुद्ध चैतन्य के मन में ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लेने की इच्छा उदय हुई। संन्यास के लिए उपयुक्त गुरु की तलाश आरम्भ हुई। स्वामी चिदाश्रम ने उन्हें संन्यास देने से इनकार कर दिया। कारण था ब्रह्मचारी का अल्पवयस्क होना। इसी समय पता चला की दक्षिण से आये एक संन्यासी पूर्णानन्द सरस्वती नर्मदा तट के चाणोद ग्राम के समीप वन में ठहरे हैं। शुद्ध चैतन्य ने स्वयं का परिचय देकर उक्त संन्यासी से स्वयं के चतुर्थाश्रम की दीक्षा देने का निवेदन किया। यह भी पता चला कि स्वामी पूर्णानन्द श्रृंगेरी मठ से आ रहे हैं और उनका लक्ष्य द्वारिका जाने को है। अपने एक साथी पण्डित के साथ शुद्ध चैतन्य उक्त संन्यासी की सेवा में उपस्थित हुए और अपना अभिप्राय बताया। जब स्वामी पूर्णानन्द को ज्ञात हुआ कि यह ब्रह्मचारी गुर्जर (गुजरात) देशीय है तो उन्होंने यह कह कर उसे संन्यास देने से इन्कार कर दिया कि वे स्वयं द्रविड़-देशोत्पन्न हैं और किसी गुर्जर देशीय को दीक्षा नहीं देंगे। जब उन्हें यह बताया गया कि गुर्जर लोग भी पञ्च द्राविड़ों (आंध्र, कर्नाटक, केरलीय, महाराष्ट्र तथा गुजरात) में गिने जाते हैं तो उन्होंने इस युवा ब्रह्मचारी को संन्यास देना स्वीकार कर लिया। मूलशंकर विधिपूर्वक शुद्ध चैतन्य संन्यासी बन गये। शिखा सूत्र का विसर्जन कर दिया। दण्ड धारण किया और गुरु के आदेश से दयानन्द सरस्वती नाम ग्रहण किया। प्रतीत होता है कि घर का एक नाम 'दयाराम' होने के कारण उन्होंने संन्यास का नाम दयानन्द रखा। इस प्रकार संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उनकी अपने दीक्षा गुरु पूर्णानन्द सरस्वती से कभी भेंट नहीं हुई। दीक्षा देकर पूर्णानन्द ने द्वारिका की ओर प्रस्थान किया। अपने संन्यास ग्रहण तथा दीक्षा गुरु का नामोल्लेख स्वयं ऋषि दयानन्द ने अपनी संक्षिप्त (अपूर्ण) आत्मकथा में किया है।

ऋषि दयानन्द के योग गुरु :- दयानन्द को संन्यास देकर गुरु पूर्णानन्द तो चले गये, परन्तु शिष्य की साधना यथावत् चलती रही। अब उन्होंने अनुभव किया कि परम तत्त्व परमात्मा की प्राप्ति के लिए योग साधना ही सर्वाधिक महत्व का साधन है। यह योग महर्षि पतञ्जलि द्वारा उपदिष्ट अष्टांग योग ही है जो समस्त जनसमुदाय के लिए सूत्रबद्ध किया गया है तथा जिसे राजयोग कहते हैं। ऐसे योगनिष्णात गुरुओं की तलाश का कार्य आरम्भ हुआ तो दयानन्द सरस्वती को 1906 वि. में चाणोद में दो योगी मिले। ये थे -शिवानन्द गिरि तथा ज्वालानन्दपुरी। योग के जिज्ञासु दयानन्द ने जब इनसे सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा कि इस समय तो वे पर्यटन में हैं। एक मास पश्चात् वे अहमदाबाद के दुग्धेश्वर महादेव के मन्दिर में आयेंगे, वहीं दयानन्द उनसे मिले। योग द्वय के आदेश को शिरोधार्य कर जब दयानन्द 1907 वि., अहमदाबाद के दुग्धेश्वर मन्दिर में उनसे मिले तो इन दोनों योग विद्या निष्णात संन्यासियों ने दयानन्द को योग के सैद्धान्तिक पक्ष तथा व्यावहारिक पक्ष का परिपूर्ण ज्ञान कराया। यहां रहकर उन्होंने योग की शिक्षा किस प्रकार प्राप्त की इसका विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता किन्तु स्वामी दयानन्द ने अपने आत्म वृत्तांत में लिखा है-

यहां उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की और अपने वचनानुसार मुझे निहाल कर दिया। अर्थात् उन्हीं महात्मा योगियों के प्रभाव से मुझे पूर्ण योग विद्या और उसकी साधन क्रिया अच्छी प्रकार विदित हो गई, इसलिए मैं उनका असत्यंत कृतज्ञ हूँ। स्वामी दयानन्द ने योग के कुछ रहस्य आबू पर्वत के प्रवास में भवानी गिरि नामक एक योगी से भी सीखे थे, जो उस समय अर्बुदा भवानी के मन्दिर में निवास करते थे।

दयानन्द के विद्या गुरु-दण्डी विरजानन्द सरस्वती : तीव्र वैराग्यवान तथा योग निष्ठ संन्यासी को भी शास्त्रों का उच्चतर ज्ञान तो अपेक्षित होता ही है। स्वामी दयानन्द का उत्तराखण्ड तथा नर्मदा के तटवर्ती प्रान्त का भ्रमण ऐसे ही किसी सर्व शास्त्र निष्णात गुरु की तलाश में लगा किन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। अंतत: उन्हें पता लगा कि इस समय मथुरा में एक वृद्ध अन्ध संन्यासी विरजानन्द हैं जो अपने छात्रों को विभिन्न शास्त्रों और विशेष रूप से व्याकरण का गहन अध्यापन कराते हैं। स्वयं नेत्रहीन होने पर भी उन्हें समस्त शास्त्र हस्तामलकवत् उपस्थित हैं। पं. लेखराम के अनुसार दयानन्द को दण्डीजी का परिचय उस समय मिला, जब वे नर्मदा के पुलिन पर भ्रमण कर रहे थे। अपने आगे की यात्रा को स्थगित कर दयानन्द 1860 ई0 के नवम्बर मास में मथुरा आये और दण्डीजी के समक्ष उपस्थित होकर उनके अन्तेवासी के रूप में शास्त्राध्ययन का अपना अभिप्राय प्रकाशित किया।

दण्डीजी ने उन्हें अपने निवास तथा भोजन की व्यवस्था पूरी कर लेने के लिए कहा क्योंकि गृह त्यागी संन्यासी के निवास तथा उदर पोषण की कोई व्यवस्था तो होती नहीं। जब जोशी अमरलाल के सौजन्य से भोजन की स्थायी व्यवस्था हो गई और निवास के लिए लक्ष्मीनारायण मन्दिर की एक कोठरी का निश्चय हो गया तो स्वामी जी का विधिवत अध्ययन आरम्भ हुआ।

दो अढ़ाई वर्ष की अल्पावधि में दयानन्द ने गुरु चरणों में बैठ कर आर्ष व्याकरण के ग्रन्थों (पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा पातञ्जलि महाभाष्य) वेदान्त तथा निरुक्त शास्त्र का अध्ययन किया। वे जब गुरु से विदा होने लगे तो दण्डीजी ने उनको निम्न कर्त्तव्यों का भावी जीवन निर्वाह करने के लिए कहा।

1. सर्वोपरि शास्त्र वेद तथा तदनुवर्ती ऋषिकृत ग्रन्थों का प्रचार उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा।
2. वर्तमान में समस्त भारत शैव, वैष्णव, शाक्त आदि संकीर्ण सम्प्रदायों के आक्रांत है। इस कारण वैदिक एकेश्वरवाद सर्वथा लुप्त हो गया है। अत: एकमेव परमात्मा की उपासना का प्रचार आवश्यक है।
3. वैदिक ज्ञान के अस्तंगत होने के फलस्वरूप भागवतादि वैष्णव पुराणों का प्रचार अत्यधिक बढ़ गया है। पुराणों की दूषित शिक्षाओं पर अंकुश लगाना चाहिए।
4. सर्वोपरि, भारतदेश की पराधीनता का नाश हो तथा स्वदेशोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो, इसका उपाय किया जाना आवश्यक है। कृतार्थ दयानन्द ने अपने इसी विद्या गुरु विरजानन्द सरस्वती का पुन: अपने ग्रन्थों में इस प्रकार किया है। 'इति श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्यणां परम विदुषां श्री विरजानंद सरस्वती स्वामिना शिष्व्येणश्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिना विरचित' ऋषि दयानन्द के ये सभी गुरु हमारे लिए आदरास्पद तथा स्वस्मरणीय हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्य, न्याय एवं वेद ....

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रति इतने आग्रहवान थे कि उन्होंने आर्य समाज का चौथा नियम यह बनाया कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' महर्षिजी ने पुन: पांचवे नियम में यह व्यवस्था दी है कि ''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।''

सत्य और न्याय एक-दूसरे के साथी हैं। जहाँ सत्य का पालन होगा वहां न्याय स्वत: होता रहेगा। जिस युग में महर्षिजी ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया उस समय कई प्रकार के अन्याय समाज में परिवारों में प्रचलित हो गए थे। सामाजिक रुप में छुआ-छूत भयानक रुप से चल रहा था। अछूतों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। परिवारों में स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उनके साथ प्राय: दासियों जैसा व्यवहार होता था। स्त्रियाँ सब प्रकार से तिरस्कृत और पैर की जूतियाँ समझीं जातीं थी। स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। महर्षि दयानन्द ने बड़े क्षोभ और उग्रता से इस अन्याय का विरोध किया। लड़कियों के लिए पाठशाला की व्यवस्था की और अछूतों के लिये छुआ-छूत के भेद भाव दूर कर दिए और उनके लिए भी पढ़ने की व्यवस्था की।

उस युग में बाल-विवाह बहुत प्रचलित था। आठ-दस वर्ष की लड़कियां भी बूढ़ों और अधेडों को ब्याह दी जातीं थीं। विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और विधवा-विवाह धर्म विरुद्ध माना जाता था। ये बाल- विधवाएं या तो वेश्या बन जाती थीं या देवदासियां बन जाती थीं। महर्षि दयानन्द ने इन सभी अन्यायों का डटकर विरोध किया। आर्यसमाज ने अपने मन्दिरों से छुआ-छूत को हटाया और बाल-विवाह के विरुद्ध सामाजिक आन्दोलन किया। हिन्दू समाज में विधवा विवाह आरम्भ हो गया, प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर में कन्याओं को पढ़ाने के लिए पाठशालाएं खुल गयीं।अछूतों को आर्यसमाज के विद्यालयों और छात्रावासों में बिना किसी रोक-टोक के प्रवेश मिलने लगा। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सामाजिक बहिष्कार का दण्ड भी भोगना पड़ा किन्तु महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के फलस्वरुप ये सामाजिक आन्दोलन बढ़ता ही गया और छुआछूत मिटने लगा तथा स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह सामाजिक अधिकार मिलने लगे, उन्हें सब प्रकार से उन्नति का अवसर सुलभ हो गया।

संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा की बड़ी उपेक्षा हो रही थी। सम्पन्न लोग उर्दू और फारसी पढ़ रहे थे। महर्षि दयानन्द ने अपने संगठन में सारे कामों को हिन्दी में करने का अनिवार्य नियम बना दिया।

महर्षि दयानन्द के इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि अछूत कुलों के विद्यार्थी भी बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य, वेदपाठी, अध्यापक बनाने लगे और बिना किसी भेद-भाव के पण्डितों की मण्डली में प्रतिष्ठित होने लगे। स्त्रियाँ भी संस्कृत और वेद की उच्चकोटि की विदुषी बनने लगीं और पुरुषों के

- शेष पृष्ठ 6 पर

'पुस्तकों से दोस्ती'

आर्यसमाज की सबसे मूल्यवान धरोहर अगर कोई है तो वह है उसका साहित्य। आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य का परिचय आज की युवा पीढ़ी अवगत करवाना हमारी जिम्मेदारी बनती हैं। इस भाव से आर्यसन्देश में हर सप्ताह एक पुस्तक का संक्षिप्त परिचय छापा जायेगा, जिससे उस पुस्तक से युवा पीढ़ी परिचित हो सके। *- विनय आर्य*

शंका समाधान

शंका समाधान (हिंद) एवं Quest&The Vedic Answers (English) मदन रहेजा जी द्वारा यह दोनों पुस्तकें अपने आप में बेजोड़ हैं। इन पुस्तकों में मदन रहेजा जी ने सरल एवं आकर्षक भाषा में उन शंकाओं का समाधान किया हैं, जो हमारे विचार में समय समय पर हमारे मस्तिष्क में उठती रहती हैं।

वैदिक सिद्धांतों की प्रारंभिक जानकारी के लिए ये दोनों पुस्तकों किसी भी नौजवान को भेंट करने के लिए सर्वोतम हैं।

मेरा सभी आर्य युवकों से अनुरोध हैं की इन दोनों पुस्तकों को स्वयं पढ़े और औरों को भी पढ़ाये। प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली, 011-23977216, 65360255 *- डॉ. विवेक आर्य, समीक्षक*

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन-दर्शन पर रचित महाकाव्य

'दयानन्द सागर' का विमोचन

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एवं वैदिक विद्वान श्री भगवानदास जी द्वारा (जो वर्तमान में आर्यसमाज, नांगल राया के प्रधान पद को भी शोभायमान कर रहे है) महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन-चरित पर आधरित एक अद्भुत महाकाव्य 'दयानन्द सागर' की रचना की है। यह ग्रन्थ लगभग 450 पृष्ठों होगा तथा इसकी अनुमानित लागत रुपये 200/- आंकी गई है किन्तु विद्जनों, प्रबुद्ध एवं सुहृदीय पाठकों के माध्यम से इस नवरचित महाकाव्य के सम्बन्ध में समीक्षात्मक विचार जानने के लिए इस रचना को मात्र रुपये 150/- में ही उपलब्ध करवाया जा रहा है। अतः जो सज्जन इस महाकाव्य को प्राप्त करना चाहें वे 3 नवम्बर 2013 तक 'आर्यसमाज नांगलराया नई दिल्ली-110046' के पते पर अग्रिम राशि भेजकर तुरन्त सम्पर्क कर सकते हैं। आर्यसमाज, नांगल राया में इस महाकाव्य का विमोचन समारोहपूर्वक 27 अक्तूबर 2013 को अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति में किया जाएगा।

- आजाद सिंह, उपमन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्य, न्याय एवं वेद के आग्रही ....

समान ही वेदों की पण्डिता भी होने लगीं। इधर छुआछूत को दूर करने का प्रयास महात्मा गाँधी ने भी किया और राष्ट्र की आत्मघाती छुआछूत की प्रथा समाप्त होने लगी। छूत-अछूत, सवर्ण-असवर्ण, सब बिना किसी भेदभाव के चाय, नमकीन, समोसे, मिठाई आदि खाने पीने लगे। इसी बीच मण्डल, कमण्डल सच्चर आदि कमीशनों, कमेटियों की रिपोर्टों ने जातिगत भावना को भड़का दिया। राष्ट्र की एकता की इस आत्मघाती नीति को राजनीतिक दलों ने भी अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण खूब बढ़ावा दिया। अब तो ऐसा लगने लगा है कि अछूत जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सभी को राष्ट्र की एकता के विभाजन का राष्ट्रघाती पुरस्कार मिलने लगा है और स्वार्थी राजनीति इन्हें चिरस्थायी करने पर तुली हुई है, महर्षि दयानन्द और महात्मा गाँधी की राष्ट्र-हितैषी छुआ-छूत को दूर करने की नीति को ही राजनीति ने निर्ममता से समाप्त कर दिया है।

वेदों को अपनाने का सिद्धान्त: महर्षि दयानन्द का सुविचारित निश्चय था कि जब तक भारतवर्ष ने वेदों की शिक्षा को अपने राष्ट्रीय जीवन में अपना रखा था, तब तक देश की सर्वांगीण उन्नति हुई और देश संसार के सभी देशों का शिरोमणि बना, महर्षि जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम ही बना दिया -"वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" वेदों को अपनाने के अनेकों कारण थे। वेद पुरुषार्थ और कर्मण्यता का उपदेश देते हैं, भाग्य, नियति का विरोध करते हैं-"**कुरुवन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेत्**"- यावत जीवन कर्म करते हुये जीने की इच्छा करो, परमेश्वर ने मानवयोनि को उन्नति करने तथा दक्षता प्राप्त करने के लिए बनाया है- "**उद्यानम् ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि**"- वेद कर्म न करने वालों को, कामचोर, दस्यु कहता है, ऐसे परजीवियों, पैरासाइटों को दण्ड देने का आदेश देता है। "**अकर्मा दस्युः बधीः दस्युं।**'' परमेश्वर ने मनुष्य को उचित, अनुचित परखने की शक्ति दी है वेद कहते है- **अश्रधां अनृते दधात्, श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।**'' वेदों में पाप क्षमा का सिद्धान्त नहीं है। पाप या पुण्य सबका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है- "**अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभं।**"

वेदों में सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति का परिपूर्ण उपदेश हुआ है। वेद में कृषि, वाणिज्य, उद्योग, सबकी शिक्षा है। वेद में सब विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों में पृथ्वी से लेकर अन्तरिक्ष और द्यौलोक पर्यन्त सब ज्ञान का परिपूर्ण वर्णन है। वेद में स्वराज्य की बड़ी महिमा है। अनेक मन्त्रों में "**अर्चननन्नु स्वराज्यम**" का सम्पुट हुआ है। वेद में प्रखर राष्ट्रवाद की महिमा का वर्णन है, प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र में सब प्रकार के विद्वान्, योद्धा, विदुषी स्त्रियाँ और बलवान गाय, घोड़े, पशु आदि हों। वेद में मातृभूमि की बड़ी उत्कृष्ट भावना विद्यमान है। अथर्ववेद में भूमिसूक्त में कहा गया है- ''**माता भूमिः, पुत्रोहम् पृथिव्याः**'' मातृभूमि की यह प्राचीनतम प्रतिष्ठा है. वेद में विश्व सरकार और विश्व नागरिक का भी वर्णन है। वेद में विश्वनागरिक को''**विश्वमानुष**''कहा गया है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी अधिक उत्कृष्ट व्यवस्था वेदों में पायी जाती है।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए भी सत्य, न्याय और वेद का प्रचार किया। मानव जाति के कल्याण में ही उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर दिया। सत्य की रक्षा के लिए ही उन्हें धोखे से विषपान कराया गया और 1883 ई० में दिवाली की संध्या को उनका देहांत हो गया। ऐसे महात्मा का पुण्य स्मरण भी सौभाग्य है। *- पी-30, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम, कोलकाता-700089*

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा मृच्छकटिकम् का मंचन

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा ''कला संस्कृति एवं भाषा विभाग'' दिल्ली के सानिध्य में 1 नवम्बर को सायं 5.00 बजे कमानी सभागार, कॉपरनिक्स मार्ग मण्डी हाउस नई दिल्ली, में महाकवि शूद्रक द्वारा विरचित विश्व के सर्वश्रेष्ठ नाटक मृच्छकटिकम् का मंचन किया जा रहा है। इस नाटक का मंचन दिल्ली के उच्च स्तरीय पात्रों के माध्यम से श्री अवतार साहनी जी के निर्देशन में किया जाएगा। *- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सचिव*

वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के सभागार में 19 से 22 सितम्बर, 2013 तक वेद प्रचार समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्म तथा विशेष वक्ता सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो. विनय विद्यालंकार जी (उत्तराखण्ड) थे। 22 सितम्बर को चार दिवसीय चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। श्री प्रभाकर शर्मा एवं कुमार योगेश आर्य ने प्रभु भक्ति एवं स्वामी दयानन्द पर आधारित सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। प्रो. विनय विद्यालंकार जी ने वेद मंत्रो की सुन्दर व्याख्या करते हुए तर्कों प्रमाणो तथ्यों उदाहरणों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड में आयी प्राकृतिक आपदा के सहायतार्थ अब तक एकत्र किये गये रु तीन लाख का चैक उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दिया गया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री चन्द्रगुप्त आर्य तथा श्री लालचन्द आर्य आमन्त्रित अतिथिओं का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। *- संगीत आर्य, मन्त्री*

आर्यसमाज साकेत का 34वां वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 27 अक्तूबर

यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 9 बजे

भजन : श्री धीरजकान्त

मुख्य वक्ता : डॉ. वागीश शर्मा

डॉ. श्याम सिंह शशि

विशेष कार्यक्रम : गुरुकुल आमसेना व सोनाबेड़ा (उडीसा) की छात्राओं द्वारा

प्रीतिभोज : दोपहर 1 बजे

- डॉ. पूर्णसिंह डबास, प्रधान

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार घोषित

गंगा प्रसाद उपाध्याय की स्मृति में 2012-13 का गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार उज्जैन को उनकी महत्त्वपूर्ण कृति दयानन्द निरुक्ति व्युपत्ति कोष तथा डॉ. रमेश दत्त शास्त्री फैजाबाद को उनकी महत्त्वपूर्ण कृति महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन पर प्रयास किया जायेगा।

पुरस्कार में 11000/-रु० स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र तथा अंग वस्त्र से विद्वानों को अलंकृत किया जाएगा। *- मन्त्री*

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 3 से 6 अक्टूबर 2013 को बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण जी के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ किया गया।

अमृतसर से पधारे पं. दिनेश पथिक के भजन हुए तथा आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन हुए। *- मन्त्री*

आर्ष गुरुकुल नोएडा में श्रावणी पर्व

श्रावणी महोत्सव पर आर्ष गुरुकुल में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रमों के तहत रविवार को विद्वत गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें आमन्त्रित विद्वानों ने वेदों की महत्ता, प्रासंगिकता और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डा. जयेन्द्र कुमार ने नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराया। गोष्ठी में पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या नन्दिता शास्त्री ने वैदिक काल की ऋषिकाएं अपाला, लोपामुद्रा, अश्वघोषा और अदिति आदि के बारे में जानकारी दी। इसी क्रम में डा. नरेन्द्र वेदालंकार एवं आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने भी अपने विचार रखे।

- कै. अशोक गुलाटी, मन्त्री

मिदनापुर में वेद प्रचार सम्मेलन

16-17 नवम्बर, 2013

स्थान : आर्यसमाज मिदनापुर, रेड क्रॉस हॉस्पीटल (बंगाल)

- सुरेश कुमार अग्रवाल, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज वेल्लिनझी, केरल

प्रधान : श्री वी. गोविन्द दास

मन्त्री : श्री के. एम. राजन

कोषाध्यक्ष : श्री एस. श्रीधर शर्मा

शोक समाचार

श्री के. के. कुमरा जी का निधन

रामगली आर्य समाज हरी नगर घंटा घर के पूर्व प्रधान व तत्कालीन संरक्षक श्री केवल कृष्ण कुमरा जी का 15 अक्टूबर 2013 को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सुभाष नगर (तिहाड़) श्मशान घाट पर श्री अशोक कुमार शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। श्री के. के. कुमरा जी का जन्म 6 मार्च 1929 को रावल पिंडी पाकिस्तान में हुआ था। श्री के. के. कुमरा जी ने पुलिस विभाग के ए.सी.पी. पद से सेवा निवृत्त हुए ।

उन्होंने अपने सेवा काल में 'सी.आई.डी.' व 'रॉ' आदि गुप्तचर विभाग में कार्य किया। तत्कालीन प्रधानमन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के पायलट रहकर देश सेवा का कार्य किया। उनको माननीय राष्ट्रपति द्वारा पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। उनकी स्मृति में शोक सभा 18 अक्टूबर 2013 को आर्य समाज पुराना राजेन्द्र नगर में आयोजित की गई।

आचार्या कमला स्नातिका दिवंगत

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस की आचार्या कमला स्नातिका का दिनांक 7 अक्तूबर, 2013 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उसी दिन किया गया।

आचार्या कमला एक सुलझी हुई वैदिक विदुषी थी, वे जहां कहीं भी प्रवचन आदि के लिए जाती थीं तो वहां पर एक छाप छोड़ती थी।

श्री दुर्गा प्रसाद आर्य नहीं रहे

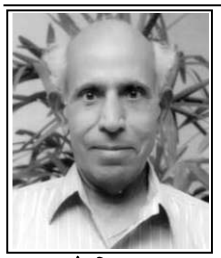

वेद प्रचार मंडल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के महामन्त्री एवं आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली के प्रधान, मन्त्री एवं संरक्षक के रूप में वर्षों तक सेवा करने वाले श्री दुर्गा प्रसाद आर्य (कालरा) का 8 अक्तूबर 2013 को निधन हो गया। वे गत दो-तीन वर्ष से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्रद्धांजलि सभा 11 अक्तूबर को हुई जिसमें सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, व. उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री शिव कुमार मदान सहित अनेक आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि दी।

श्री कालरा जी का जन्म 1 नवम्बर, 1938 को वर्तमान पाकिस्तान के जिला मुजफ्फरगढ़ में श्री धर्मदेव जी एवं श्रीमती शोभादेवी के यहां हुआ। वैदिक धर्म एवं आर्यसमाजी संस्कार उन्हें पैतृक रूप से प्राप्त हुए ।

भारत विभाजन के बाद वे माता-पिता के साथ दिल्ली के बाग कड़े खां तथा तथा आर्यसमाज सराय रोहिल्ला में बसे तथा आर्यसमाज की स्थापना में योगदान दिया। वर्ष 1984 में वे बाहरी दिल्ली के प्रशान्त विहार क्षेत्र में बस गए और यहां भी आर्यसमाज की स्थापना के लिए प्रयासरत रहे। आर्यसमाज प्रशान्त विहार उनके मनोयोग का ही परिणाम है। अपनी अस्वस्थता के बावजूद आजीवन उन्होंने अपने परिवार में प्रत्येक पूर्णमासी को यज्ञ करने की परम्परा का निर्वाह किया। अपनी पैतृक सम्पत्ति आर्यसमाज की विचारधारा को उन्होंने अपनी सन्तति में सतत् प्रवाहित किया, जिससे उनका पूरा परिवार वैदिक धर्म पताका का वाहक बना हुआ है।

श्री आशानन्द आर्य का निधन

वयोवृद्ध आर्य नेता श्री आशानन्द जी आर्य का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 15 सितम्बर 2013 को उनके बड़े सुपुत्र श्री वेदप्रकाश जी आर्य के निवास स्थान गुडगांव में देहावसान हो गया। उनकी अन्तिम शोक सभा दिनांक 17 सितम्बर 2013 को गणपति सोसायटी सैक्टर 56 गुडगांव में 3 से 4 बजे तक सम्पन्न हुई। उनका जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के एक छोटे से कस्बे कमालिया जिला लायलपुर में 1 जनवरी 1913 को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भी कमालिया के एक सरकारी स्कूल में हुई। 1927 ईस्वी को आपको आर्य युवक सभा के सदस्य बनने की प्रेरणा मिली। 1957 में आपने हिन्दी सत्याग्रह में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आप लुधियाना में आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी थे। 1976 में आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मन्त्री चुना गया। तब से लेकर आज तक आप सभा से जुडे रहें आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में अधिष्ठाता आर्य वीर दल, उप प्रधान और मंत्री पदों को सुशोभित किया और वर्तमान में आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

छात्रवृति एवं प्रतिभा पुरस्कार

मानव सेवा प्रतिष्ठान के 15 वर्ष पूर्ण होने के शुभावसर पर संस्थान ने छात्रवृति एवं प्रतिभा पुरस्कार तथा अभिनन्दन समारोह 6-10-2013 को गुरुकुल गौतमनगर में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह में 10 विद्वानों एवं विदुषियों को प्रशस्ति-पत्र, शाल तथा 11-11 हजार रुपये से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा विभिन्न शिक्षा संस्थाओं एवं गुरुकुलों के जरुरतमंद, मेधावी 135 छात्र/छात्राओं को 4.75 लाख रुपये छात्रवृति एवं प्रतिभा पुरस्कार के रुप में वितरित किये गये।

- रामपाल शास्त्री

आर्यसमाज खलासी लाईन में सामवेद यज्ञ पारायण

चालीस दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ के अठारहवें दिवस पर यज्ञ श्रीमती शोभा आर्य के पौरोहित्य में हुआ। मुख्य यज्ञमान सुनीता गुप्ता रहीं। यज्ञ के उपरांत आर्यसमाज खलासी लाईन सहारनपुर (उ. प्र.) के वरिष्ठ पुरोहित श्री बारुराम शर्मा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मन, वचन, कर्म से उपासना करनी चाहिये एवं परमात्मा से शुद्ध अन्त:करण से मांगना चाहिये। अगर हमारा अन्त:करण शुद्ध नहीं है तो हमारी उपासना निरर्थक है। इस अवसर पर सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, सुमन गुप्ता, मिथलेश, आशा, आशा रानी, रमेश राजा, रघुबीर कौर, सुरेश सेठी, मूलचंद यादव, पुष्पा देवी एवं श्रीमती रश्मि गर्ग विशेष रूप से उपस्थित थे।

- रविकान्त राणा, मन्त्री

चतुर्वेद शतकम यज्ञ सम्पन्न

6 अक्टूबर को महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर ने 19वें स्थापना दिवस समारोह पर चतुर्वेद शतकम यज्ञ की पूर्णाहुति की। यज्ञ के ब्रह्मा डा. कृष्णपाल सिंह थे। भजनोपदेशक पंडित सत्यपाल 'सरल' के भजनों ने माधुर्य बिखेरा। महिला आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती सरोज कालरा ने विद्वानों, आचार्यों का सम्मान तथा समाज के प्रधान अर्जुन कालरा ने उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

- ईश्वर दयाल माथुर, उप प्रधान

गुरुकुल पौंधा का शूटिंग में शानदार प्रदर्शन

उत्तराखण्ड राज्य स्तरीय शूटिंग प्रतियोगिता में गुरुकुल पौंधा के छात्रों ने ओपन साइड राइफल के साथ ही 10 मीटर पीप एयर राइफल में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रात किया। 5 से 10 अक्तूबर तक मझौन, दून स्थित जसपाल राणा शूटिंग अकादमी में आयोजित 12वीं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के व्यक्तिगत जूनीयर वर्ग 10 मीटर ओपन साइड राइफल में शिवदेव आर्य ने स्वर्ण जीता। सीनियर वर्ग की व्यक्तिगत राइफल और 50 मीटर फ्री पिस्टल में अक्षय कुमार ने स्वर्ण और 10 मीटर एयर पिस्टल, पीप राइफल में कांस्य पदक अपने नाम किया। अनुदीप ने 50 मीटर फ्री पिस्टल में रजत और टीम वर्ग में स्वर्ण जीता। जूनियर वर्ग की 10 मीटर एयर पिस्टल में हंसराल मंगल मानू कुमार ने कांस्य पर कब्जा किया। गुरुकुल पहुंचने पर संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द और आचार्य डॉ. धनंजय ने सभी को सम्मानित किया। *- आचार्य*

12 परिवारों के 110 सदस्यों ने स्वेच्छा से पुन: वैदिक धर्म स्वीकार किया

दिनांक 15 सितम्बर, 13 को ग्राम गढ़ा जिला सम्भल में 110 ईसाई भाईयों ने वैदिक हिन्दू धर्म स्वेच्छा से स्वीकार किया। इस कार्यक्रम का आयोजन शुद्धि सभा के प्रचारक श्री मटरु लाल आर्य द्वारा किया गया।। ग्राम गढ़ा के 12 परिवारों के 24 पुरुष, 26 महिलाओं एवं 60 बच्चों सहित वैदिक धर्म में सम्मिलित होकर सभी पुरुष व स्त्री एवं बच्चो बड़े खुश हुए। ये लोग करीब साठ वर्ष पूर्व बहजोई के चर्च के पादरी द्वारा ईसाई बनाए गए थे। सभी ने यज्ञ वेदी पर बैठकर संकल्प लिया कि अब हम कभी ईसाई पादरियों के बहकावे में नहीं आएंगे। शुद्धि संस्कार के बाद सभी लोगों ने प्रतिभोज किया। शुद्ध संस्कार श्री शेखर आर्य ने कराया।

साभार - शुद्धि समाचार, अक्तूबर, 2013

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 21 अक्तूबर, 2013 से रविवार 27 अक्तूबर, 2013
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24/25 अक्तूबर, 2013
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 अक्तूबर, 2013

विश्वव्यापी आर्य समाज के आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

सदियों की परम्परा एवं विश्वास

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुणों से भरपूर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

प्राकृतिक आयुर्वेदिक उदत्पाद
चाय, पायोकिल, आंवला रस, चव्यनप्राश, मधुमेह नाशिनी, शहद

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कां.फार्मेसी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर
20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक आर्डर बुक कराने पर 10% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/–रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर
दिल्ली आर्य प्रतिनिघि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर